# हिन्दी साहित्य

टेस्ट-1

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-23 **HL-2301**

| | |
|---|---|
| *निर्धारित समय: तीन घंटे*<br>*Time Allowed: Three Hours* | *अधिकतम अंक : 250*<br>*Maximum Marks : 250* |

नाम (Name): Payal Agwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 01 / 22-06-2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

| 0 | 8 | 4 | 5 | 8 | 1 | 7 |
|---|---|---|---|---|---|---|

---

## *Question Paper Specific Instructions*

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

---

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

---

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Evaluator (Code & Signatures)*

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Reviewer (Code & Signatures)*

## Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधुनिक मानक हिन्दी का आधार खड़ी बोली पर ही आधारित है। मध्यकाल में अमीरखुसरो के साहित्य जैसे पहेली, मुकरी आदि में खड़ी बोली के प्रारम्भिक प्रयोग के साक्ष्य दिखाई देते है।

अमीर खुसरों द्वारा साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया गया है जैसे- पहेली, मुकरी, सुखने आदि। अत: अधिकांशत: साहित्य में ब्रजभाषा के साथ खड़ी बोली के दर्शन होते है।

उदा०- क) पहेली में खड़ी बोली -

~~सबके सिर औंधे~~

"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा
जहाँ जहाँ जाये वहाँ चले, मोती न उससे एक झरे"


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार, मुकरी नामक साहित्यिक विधा में भी खड़ी बोली का प्रयोग है।

उदा०

"मेरा मोसे श्रृंगार करावत, आगे बैठके मान बढ़ावत,
देखन चिक्कन न कोई दिशा, ए सखी साजन न सखी सीसा।"

इसी तरह, अमीर खुसरो द्वारा सुखने नामक साहित्यिक विधा में भी खड़ी बोली का स्पष्ट प्रयोग है।

उदा० "पान क्यों सड़ा
घोड़ा क्यों खड़ा,
फेरा न था।"

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है आधुनिक खड़ी बोली का रूप अमीर खुसरो के साहित्य में मध्यकाल से ही प्रयोग होने लगा था।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में हिन्दी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। इन्हीं कारण से हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाता है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में देश के महान नेताओं, साहित्यकारों जैसे - महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, राजगोपालाचारी, मदन मोहन मालवीय और भारतेंदु, हजारीप्रसाद द्विवेदी क्रमशः आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

हिन्दी भाषा में पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, रेडियो, मीडिया आदि संचार माध्यमों का उपयोग सुचारु रूप में किया गया जिससे देश के सभी लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ रखा।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

तिलक, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरमवादी दल के सदस्य थे। इनके द्वारा कई पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का सम्पादन हिन्दी भाषा में किया गया। साथ ही, स्वतंत्रता आंदोलन में संचार हेतु भाषा के रूप में हिन्दी के उपयोग के पक्ष में समर्थन किया।

बाल गंगाधर तिलक, स्वतंत्रता आंदोलन में देश के सभी लोगों को शामिल करने के पक्ष में थे अतः इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बनने हेतु उपयुक्त थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

किसी भी देश को एक सूत्र में बांधने हेतु एक भाषा (राष्ट्रभाषा) की आवश्यकता होती है। अतः भारत जैसे विविधता वाले देश में एक राष्ट्रभाषा के चुनाव मुश्किल था।

अतः उस समय के महान नेताओं आदि द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग का पक्ष लिया गया।

काप्रनाप्रसाद प्रसाद और बाजपेयी द्वारा हिन्दी भाषा के मानकीकरण का प्रयास किया गया।

इसी प्रकार पुरुषोत्तमदास टण्डन जी द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुरुषोत्तम दास दण्डन का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाव्य में कृष्णभक्तिधारा के कवियों में रहीम का महत्वपूर्ण योगदान है। रहीम द्वारा मुख्यतः कृष्णभक्ति मुक्तक काव्यों की रचना की गई। जिसमें ब्रजभाषा के साथ-साथ खड़ी बोली हिन्दी के भी प्रारंभिक प्रयोग स्पष्टतः दिखाई देते हैं।

रहीम के दोहे में खड़ी बोली का प्रयोग –

" रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सुन,
पानी गये न उबरै, मोती मानुष चुन।"

उपरोक्त दोहे में पानी, मोती आदि शब्दों का प्रयोग खड़ी बोली के प्रयोग को दर्शाता है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'मारवाड़ी' बोली

बोली से तात्पर्य एक सीमित क्षेत्र में स्थानीय लोगों द्वारा आपस में संचार हेतु प्रयोग का माध्यम होना है। कम व्यापकता के कारण एवं मानक रूप न होने के कारण इसे भाषा का दर्जा नहीं दिया जाता है।

परन्तु, बोली के अत्यधिक विकास और व्यापक विस्तार के बाद इसे भाषा का दर्जा दिया जा सकता है।

मारवाड़ी बोली के विषय में

राजस्थानी हिन्दी
- मेवाती
- मालवी
- मारवाड़ी

अतः मारवाड़ी बोली का विकास राजस्थानी हिन्दी के अंतर्गत ही हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## मारवाड़ी बोली का भौगोलिक क्षेत्र

मारवाड़ी बोली का प्रयोग मुख्यतः राजस्थान राज्य के पश्चिमी क्षेत्र में किया जाता है। इसकी सीमा, मध्यप्रदेश, दिल्ली और हरियाणा से भी लगती है।

### व्याकरणिक विशेषताएँ

#### ध्वनि संरचना

1) 'न' ध्वनि का 'ण' के रूप में प्रयोग
उदा० पानी → पाणी
2) ट वर्ग ध्वनियों का प्रयोग

#### शब्द संरचना

1) देशज शब्दों का प्रयोग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

भारत को अंग्रेजों द्वारा लगभग 200 वर्षों तक उपनिवेश बनाये रखा गया। अतः अंग्रेजों से स्वतंत्रता हेतु आंदोलन में सम्पूर्ण देश के लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करने हेतु एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता थी जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सके।

तत्कालीन समय में महात्मा गांधी द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर संभाली गई थी। चूंकि गांधीजी ने आंदोलन आरंभ करने से पूर्व ही सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया था अतः वे भारत की भौगोलिक, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अवगत थे। अतः उन्होंने इन्हीं आधारों पर 'हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

## महात्मा गांधी द्वारा हिन्दी / हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा दिये जाने के कारण

1) सामाजिक कारण – भारत की अधिकांश जनसंख्या हिन्दी भाषा से परिचित थी। उत्तर भारत के 10 राज्य हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रयोग करते थे। अत: राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दुस्तानी ही उपयुक्त भाषा थी।

2) अंग्रेजों द्वारा भी फोर्ट विलियम कॉलेज, ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म प्रचार आदि में हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया गया अत: ब्रिटिश शासन से संवाद स्थापित करने में भी सहज थी।

3) साहित्यकारों जैसे- भारतेंदु, दिनकर, निराला द्वारा भी देशभक्ति साहित्य की रचना हिन्दी में ही की गई।



## महात्मा गांधी जी का योगदान

1) महात्मा गांधी द्वारा इंदौर सम्मेलन में हिन्दी के दक्षिण भारत में प्रसार को बढ़ावा देने हेतु प्रयास किये गये।

2) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में भी हिन्दी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा।

3) महात्मा गांधी द्वारा भाषणों, संवादों, पत्राचार आदि में हिन्दी भाषा का प्रयोग।

4) महात्मा गांधी द्वारा हिन्दी प्रचारिणी सभा, मद्रास का गठन किया गया और दक्षिण भारत में हिन्दी के समर्थन को बढ़ावा दिया गया।

5) महात्मा गांधी द्वारा कई पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि का लेखन और प्रकाश हिन्दी भाषा में किया गया।

इस प्रकार महात्मा गांधी का योगदान हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण है।

5



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी के मानकीकरण के महत्वपूर्ण घटक

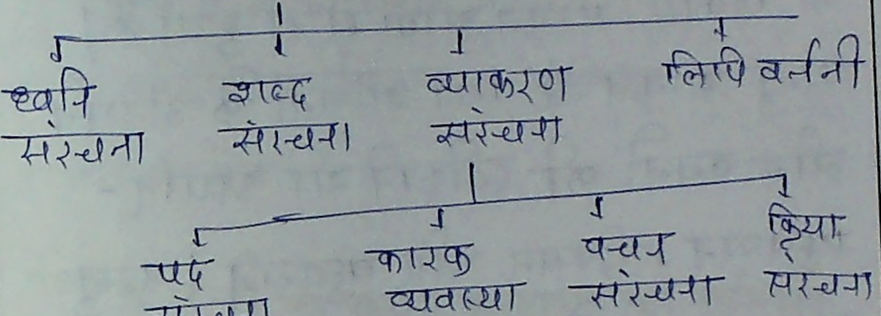


मानक हिन्दी का विकास आर्यभाषा संस्कृत के सरलीकरण द्वारा ही हुआ है। अतः मानक हिन्दी की आधिकांशतः विशेषतः संस्कृत भाषा से ही विकसित हुई है।

परन्तु सरलीकरण की प्रक्रिया में कुछ विशेषताओं को संस्कृत के समान रखा गया तो कुछ में परिवर्तन किया गया। यथा०

→ संस्कृत में तीनलिंगों की व्यवस्था थी परन्तु मानक हिन्दी में केवल दो लिंग (पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का ही प्रयोग होता है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## मानक हिन्दी की वचन संरचना

चूंकि हम जानते है कि मानक हिन्दी का विकास संस्कृत भाषा से ही हुआ है। परन्तु संस्कृत में वचन संरचना के अंतर्गत तीन वचनों की स्वीकृति थी अर्थात्- एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। परन्तु मानक हिन्दी में केवल दो वचनों के प्रयोग को ही शामिल किया गया है। (एकवचन और बहुवचन)

मानक हिन्दी में द्विवचन के प्रयोग को समाप्त कर, द्विवचन के सभी पदों को बहुवचन में शामिल कर दिया गया।

उदा०-

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| 1) | लड़का | लड़के |
| 2) | पुस्तक | पुस्तकें |


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## मानक हिन्दी की वचन संरचना के लाभ

1) संस्कृत में प्रयुक्त जटिल वचन संरचना के स्थान में सरल वचन संरचना।
2) वचनों के वर्गीकरण में सुविधा
3) बोधगम्यता

## मानक हिन्दी की वचन संरचना की कमियाँ

1) केवल दो वचनों के प्रयोग (एकवचन और बहुवचन) से वचनों के वर्गीकरण में दिक्कत
2) द्विवचन का बहुवचन में शामिल होने से, द्विवचनों के समूह को समझने में उलझन।

निष्कर्षतः मानक हिन्दी की वचन संरचना एक मानक रूप को प्राप्त कर चुकी है। संस्कृत के सरलीकरण रूप प्राप्त वचन संरचना स्वीकृत है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया द्वारा हुआ है। संस्कृत जैसी जटिल तत्समी भाषा से खड़ीबोली जैसी सरल, सर्वग्राह्य लोकभाषा के विकास में लम्बी यात्रा करनी पड़ी है।

संस्कृत
↓
पाली
↓
प्राकृत
↓
अपभ्रंश
↓
अवहट्ट
↓
पुरानी हिन्दी (आदिकाल)
↓
(ब्रजभाषा + अवधी) ← मध्यकालीन हिन्दी (भक्तिकाल + रीतिकाल)
↓
आधुनिक हिन्दी (आधुनिककाल)
(खड़ीबोली)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ीबोली

खड़ी बोली के प्रारम्भिक प्रयोग के साक्ष्य आदिकाल में अमीर खुसरो के काव्यों में ही दिखायी देने लगे थे।

भक्तिकाल में सूफी काव्यधारा और संतकाव्यधारा के कवियों द्वारा भी अपनी रचनाओं में खड़ी बोली के प्रयोग के साक्ष्य मिल जाते हैं।

उदा०

कबीर द्वारा खड़ी बोली का प्रयोग

"लाली मेरे लाल की, जित देखूँ उत लाल,
लाली देखन मैं चला, मैं भी हो गया लाल।"

कबीरेतर संतकवियों द्वारा खड़ी बोली का प्रयोग –


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1) कुंभनदास द्वारा प्रयोग -

"कुंभन को कहा सिकरी से काम
आवत-जात पनहियां टूटी,
बिसरी गयो हरिनाम।"

2) रहीम द्वारा खड़ी बोली का प्रयोग

रहीमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून,
पानी गये न ऊबरै, मोती मानस चुन।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी के मानकीकरण हेतु कई घटकों का प्रयोग किया जाता है। जैसे

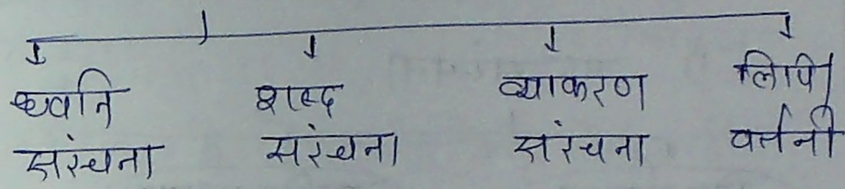


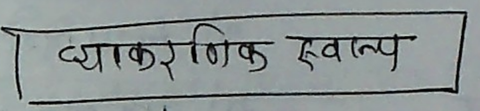


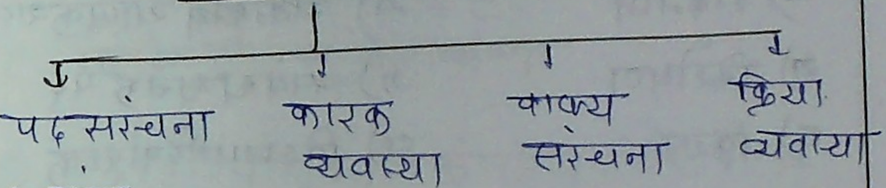


→ संज्ञा
→ सर्वनाम
→ विशेषण
→ क्रियाविशेषण
→ संबोधन
→ संबंधसूचक
→ लिंग संरचना
→ वचन संरचना


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक संरचना के अंतर्गत व्याकरण स्वरूप में प्रयोग होने वाले सभी अवयवों की व्याख्या की जाती है।

1) पद संरचना

विकारी पद — अविकारी पद

क) संज्ञा — क) क्रिया विशेषण
ख) सर्वनाम — ख) ~~संबंधबोधक~~ योजकशब्द
ग) विशेषण — ग) संबंधसूचक पद
घ) क्रिया — घ) विस्मयादिबोधक सूचक शब्द

2) कारक व्यवस्था

कर्ता – ने
कर्म – को
करण – से
सम्प्रदान – के लिये
अपादान – से (अलग होने का भाव)
संबंध – का, के, की
अधिकरण – में, पर
संबोधन – हे, अरे, आह


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) वाक्य संरचना

सरल वाक्य — मिश्र वाक्य — संयुक्त वाक्य

1) केवल एक उद्देश्य और एक विधेय हो, साधारण वाक्य या सरल वाक्य।

2) एक उद्देश्य हो, परन्तु एक से अधिक विधेय हो, संयुक्त वाक्य

3) एक उद्देश्य युक्त एक वाक्य और अन्य उपवाक्य उस पर आश्रित हो, मिश्र वाक्य कहलाता है।

4) क्रिया व्यवस्था

सकर्मक क्रिया — अकर्मक क्रिया — संयुक्त क्रिया — संयोजी क्रिया — मुख्य क्रिया

उदा. राम, चलते चलते थक गया।
मुख्य — संयोजी — मुख्य — सहायक क्रिया


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## लिंग व्यवस्था

केवल दो लिंग

पुल्लिंग  स्त्रीलिंग

→ नपुंसकलिंग का प्रयोग बंद।

## वचन व्यवस्था

केवल दो वचनों में वर्गीकरण

एकवचन  बहुवचन

→ द्विवचन के सभी रूपों को, बहुवचन में शामिल कर दिया गया।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना में क्रिया व्यवस्था एक महत्वपूर्ण भाग है। हिन्दी भाषा के मानकीकरण में क्रिया व्यवस्था के वस्तुनिष्ठ वर्गीकरण की आवश्यकता होती है।

## मानक हिन्दी की क्रिया व्यवस्था

क्रिया - किसी कार्य को करने का भाव प्रकट हो तो उसे क्रिया कहते हैं।

उदा० राम घर जाता है।

इस वाक्य में 'जाना है', में 'जाना क्रिया है।

### क्रिया व्यवस्था की संरचना

अकर्मक क्रिया  सकर्मक क्रिया


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1) अकर्मक क्रिया - इस क्रिया में कार्य कर्म पर होने की अपेक्षा अनुपस्थित होती है।

उदा० राम गया।

उपरोक्त वाक्य में कार्य होने का भाव स्पष्ट नहीं है।

2) सकर्मक क्रिया - इसमें काम के होने का समर्थन स्पष्टत: होता है।

उदा०- राम वन की ओर गया।

अर्थात् सकर्मक क्रिया में काम के होने की दिशा और परिणाम उपस्थित होता है।

**क्रिया अवस्था का अन्य आधार पर वर्गीकरण**

- संयोजी क्रिया
- सहायक क्रिया
- मुख्य क्रिया
- संयुक्त क्रिया


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1) मुख्य क्रिया - जो किसी वाक्य के मुख्य क्रियापद को दर्शाती।

उदा० राम काम करते-करते थक गया।

इस वाक्य में थकना मुख्य क्रिया है।

2) संयोजी क्रिया - ऐसी क्रिया जो मुख्य क्रिया के होने में सहायक हो।

उदा० करते-करते

3) सहायक क्रिया - वह क्रिया, जो मुख्यक्रिया के साथ आकर वाक्य को पूरा करने में सहायक हो।

उदा० है, थे, था।

निष्कर्षत: मानक हिन्दी की क्रियावस्था, वस्तुनिष्ठ और मानकत्व को प्राप्त करने में सफल रही है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी के विकास में कई साहित्यकारों, नेताओं, आंदोलनकर्ताओं, भाषाविज्ञानियों का योगदान रहा है।

मानक हिन्दी का विकास मुख्यतः संस्कृत भाषा से माना जाता है। क्योंकि संस्कृत एक क्लिष्ट और जटिल भाषा थी अतः संस्कृत के सरलीकरण द्वारा मानक हिन्दी की रूपरेखा तैयार की गई।

मानक हिन्दी के विकास में कामताप्रसाद त्रिवेदी, श्रीकिशोरीदास वाजपेयी, पुरुषोत्तमदास टण्डन आदि महान नेताओं का योगदान रहा है जिन्होंने मानक हिन्दी के आधुनिक रूप की रूपरेखा तैयार की।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मानक हिन्दी के विकास में श्रीकिशोरी-दास वाजपेयी की भूमिका -

मानक हिन्दी के व्याकरण के निर्माण में कामताप्रसाद त्रिवेदी और श्रीकिशोरी दास वाजपेयी का महान योगदान है।

श्री किशोरीदास वाजपेयी ने मानक हिन्दी की व्याकरण संरचना के आवश्यक घटकों की रूपरेखा तैयार की और हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा का दर्जा देने में अहम योगदान दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखियेः 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

आधुनिक खड़ी बोली का विकास संस्कृत भाषा के सरलीकरण के द्वारा हुआ है।

संस्कृत
↓
पालि
↓
प्राकृत
↓
अपभ्रंश/अवहट्ट
↓
(1100-1350) पुरानी हिन्दी (आदिकाल) → सिद्ध/नाथ साहित्य
↓
मध्यकालीन हिंदी
↓
आधुनिक हिंदी

अतः आदिकाल के सिद्ध-साहित्य में भी खड़ी बोली के प्रारंभिक प्रयोग के साक्ष्य दिखायी देते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सिद्ध साहित्य के प्रमुख साहित्यकार कण्हपा, सरहपा, के काव्यों में कहीं-कहीं आधुनिक खड़ी बोली के शब्द मिलते हैं।

उदा०

"जो मर जइये, खरिया पर तो कौआ गिद्ध
न खइये माँस।"

"जाणि के अजाणि के, बात लो पधाणी,
चैलों हो दूध्या लाभ हाइआ, बात जो माणि।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विकारी और अविकारी पद

मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना के अंतर्गत पद संरचना का मुख्य योगदान होता है जो किसी भी भाषा के मानकीकरण में अहम योगदान देता है।

मानक हिन्दी के घटक

- ध्वनि संरचना
- शब्द व्यवस्था
- व्याकरणिक संरचना
  - पद संरचना
  - कारक व्यवस्था
  - क्रिया
  - वाक्य

पद संरचना

विकारी पद
- → संज्ञा
- → सर्वनाम
- → विशेषण
- → क्रिया

अविकारी पद
- → क्रियाविशेषण
- → योजक सूचक शब्द
- → संबंध सूचक शब्द
- → विस्मयादिबोधक शब्द

संज्ञा - व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, विचार आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

उदा० राम, दिल्ली आदि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम - संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्द
उदा० वह, कौन, वही, यही।

क्रिया - काम के भाव को बताने वाले शब्द
उदा०- राम जाना है।

विशेषण - संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द
उदा० काला, गोरा

क्रियाविशेषण - क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द
उदा० धीरे चलना

योजकशब्द - दो वाक्यों को जोड़ने वालेशब्द
उदा० और, तथा।

संबंधसूचकशब्द - दो वाक्यों के संबंध को बताने वाले
उदा० के लिये, के बिना

विस्मयादिबोधकशब्द - आश्चर्य भाव को दर्शाने वाले
उदा० आह, अरे, वाह


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी उपभाषा समूह से संबंधित है।

ब्रजभाषा की व्याकरणिक विशेषताएँ

1) ओकारांतता
उदा०- मेरा मोसे शृंगार करावत, आगे बैठकर मानबढ़ावत।

2) उकारबहुला भाषा
उदा० कहत नटत रिझत खिजत, मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं, नैनुनु ही सौं बात।

3) द्वित्वीकरण और क्षतिपूर्ति दीर्घीकरण
कर्म → कम्म → काज


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4) हिं परसर्ग का प्रयोग, सभी कारकों में।

5) देशज, विदेशज, तद्भव शब्दों का समावेशन

6) लिंग में केवल दो ही < पुल्लिंग / स्त्रीलिंग

7) केवल दो ही वचन < एकवचन / बहुवचन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

ब्रजभाषा की भक्तिकाल में व्यापकता के कारण अखिल भारतीय काव्यभाषा का दर्जा हासिल किया था।

**ब्रजभाषा का भौगोलिक क्षेत्र**

ब्रजभाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। अतः यह पश्चिमी हिन्दी उपभाषा समूह की भाषा है।

→ इसका प्रयोग मुख्यतः पश्चिमी उत्तरप्रदेश में होता है जिसमें मथुरा, आगरा और राजस्थान, दिल्ली के भी कुछ क्षेत्र शामिल होते हैं।

शौरसेनी अपभ्रंश
↓
पश्चिमी हिन्दी
→ ब्रजभाषा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

## ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारण

1) ब्रजभाषा का जन्म मुख्यतः कृष्ण जन्मभूमि में हुआ था। चूंकि भगवान कृष्ण को लोकरंजक भगवान का दर्जा प्राप्त है। अतः इसी कारण इस भाषा में भी कलात्मकता के गुण है।

2) चूंकि ब्रजप्रदेश एक मैदानी, उपजाऊ भूमिवाला क्षेत्र है जहाँ कृषि की उत्पादकता है और समृद्धता है अतः लोगों को आराम के समय मनोरंजन हेतु कला से जुड़े क्रियाकलापों में शामिल होना पसंद है। इसी कारण भाषा में भी कलात्मकता के गुण।

उदा० रासलीला


Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3) रामकाव्यधारा के लोकमंगलकारी गंभीर भाव के बाद, कृष्णभक्ति काव्यधारा में कृष्णभक्ति के लोकरंजककारी भाव ने लोगों को भक्ति की ओर अधिक आकर्षित किया।

अतः कृष्ण भक्ति संबंधी मिथकों से जुड़े होने कारण।

4) रीतिकाल के कवियों जैसे बिहारी केशवदास आदि ने चमत्कारिकता दिखाने हेतु कलात्मक स्वरूप को बढ़ावा दिया।

5) लक्षणग्रंथ परम्परा के अनुसरण के कारण।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश की पश्चिमी हिन्दी से हुआ है।

इसका विभाजन तीन कालों में किया जाता है।

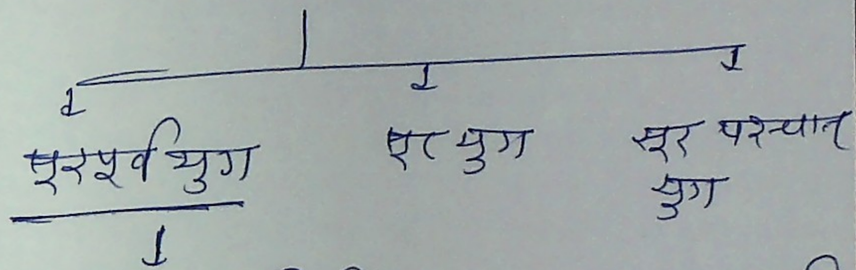


वल्लभाचार्य के द्वारा अष्टछाप की स्थापना की गई थी

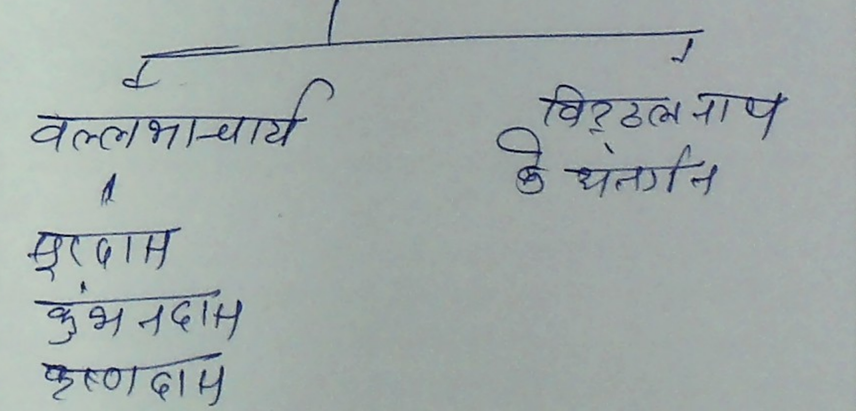



Copyright – Drishti The Vision Foundation